ऋण स्वीकार

ऋण स्वीकार

मेरी यह शोधयात्रा में मुझे नित्य मार्गदर्शन और प्रेरित करते मेरे गुरु स्वरुप मार्गदर्शक डॉ.अश्विनीकुमार सिंह जी का मैं हृदयपूर्वक आभार व्यक्त करता हूँ। जो हमेशा केवल मार्गदर्शक के रूप में ही नहीं किन्तु भावात्मक रूप से जुड़कर संशोधनात्मक कार्यो में प्रोत्साहित करते रहे है। यह शोधकार्य आप श्री के मार्गदर्शन और हिम्मत के कारण ही पूर्ण कर रहा सका हूँ। मेरे अति व्यस्त सरकारी कार्यकाल के दौरान मेरे संशोधन कार्य को लेकर धीरज रखकर और सकारात्मक हौंसला बढाते हुए मार्गदर्शन करने के लिए मैं सिंह साहब जी का जितना आभार व्यक्त करू उतना कम है और रहेगा।

मेरे इस शोध के प्रारम्भ से हमेशा मुझे प्रोत्साहित करने वाले चाँद और सूरज जैसे लोचन से हमेशा संगीत साधको के मार्गदर्शक प्रेरणा स्वरुप एवम् चलते फिरते जीवंत ध्वनिलेखागार स्वरुप श्री डॉ.राजेश केलकर, अध्यक्ष, डिपार्टमेन्ट ऑफ़ म्यूजिक,का हृदयपूर्वक आभार व्यक्त करता हूँ। हमेशा मुस्कुराकर, एक दोस्त की भाँती मार्गदर्शन देने वाले गुरु डीन, फ़ैकल्टी ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स एवं तबला विभाग के अध्यक्ष, प्रो० गौरांग भावसार जी का भी इस प्रसंग पर आभार व्यक्त करता हूँ। जिनकी प्रेरणा शक्ति के बिना यह शोध कार्य पूर्ण नहीं हो सकता था।

मेरे गुरुदेव श्री ऋषिकुमार शास्त्री जी, वाग्येकार, गायक एवं क्यूरेटर, सप्तक आर्काव्स, अहमदाबाद का जितना आभार व्यक्त करू उतना कम होगा, क्योंकि उन्ही के आशीर्वाद से संगीत एवं ध्वनिलेखागार को जानने का, देखने का सामर्थ्य प्राप्त हुआ, उनकी प्रेरणा, मार्गदर्शन, अभ्यास के बिना ध्वनिलेखागार के प्रति शोध कार्य हो पाना असंभव होता। उनके आशीर्वाद से यह शोधकार्य पूर्ण कर सका हूँ। साथ ही उनके सुपुत्र श्री वशिष्ठ शास्त्री, तबला वादक के पारिवारिक प्रेम और सकारात्मक सहयोग से यह यात्रा पूर्ण कर सका हूँ। शास्त्री परिवार का भी इस अवसर पर आभार व्यक्त करता हूँ।

सप्तक संस्था, अहमदाबाद मेरे बाल्यकाल से सांगीतिक परिवार का हिस्सा रही है। गुरु श्री पंडित नंदन महेता जी, माता जी विदुषी मंजुबेन महेता जी, सुश्री हेतल बेन और श्री संदीप भाई जोशी एवंम श्री प्रफुल्ल अनुभाई शाह ट्रस्टी, सप्तक के आशीर्वाद और सहयोग से सप्तक ध्वनिलेखागार में तकरीबन 10 साल कार्य करने का अनुभव मिला जो मेरे इस शोध कार्य का आधार बना। सप्तक परिवार ने मेरे उनके साथ के कार्यकाल से लेकर मेरी प्रवर्तमान सरकारी नौकरी के कार्यकाल में और आज तक हमेशा आशीर्वाद और सहयोग सदैव मुझ पर रखा है। सदैव उन्ही के परिवार का हिस्सा मानकर मार्गदर्शन किया है। सप्तक के ही

सहयोग से मेरे इस शोध विषयक अभ्यास में अन्य अनेक विभूतियों तथा ध्वनिलेखागार से संपर्क स्थापित हुए है। इसलिए उनका विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूँ।

पंडित सत्यशील देशपांडे जी तथा उनके सुपुत्र श्री श्रीजन देशपांडे जी, संवाद फाउन्डेशन, पुणे, महाराष्ट्र का भी आभार व्यक्त करता हूँ। उनका साक्षात्कार अत्यंत रोचक और ध्वनिलेखागार के विषय में स्पष्टता देनेवाले रहा। संवाद फाउन्डेशन, पुणे, महाराष्ट्र के सहयोग के लिए उनका आभार व्यक्त करता हूँ।

मेरे इस विषय में साक्षात्कार, मार्गदर्शन, आशीर्वाद एवम् सहयोग देनेवाले सभी कलाकार पंडित विकास कशालकर जी, गुरु श्री विदुषी मंजूषा पाटिल कुलकर्णी जी, सुश्री विराज अमर, श्री हेमंत गांधर्व जी का हृदयपूर्वक आभार व्यक्त करता हूँ।

विशेषतः सप्तक आर्काव्स, अहमदावाद, गुजरात, संवाद फाउन्डेशन, पुणे, महाराष्ट्र, जाधवपुर यूनिवर्सिटी, बड़ौदा यूनिवर्सिटी, IGNCA, नई दिल्ली, जैसे जितने ध्वनिलेखागार और उनके संस्थापक/क्यूरेटर ने मेरे इस शोध कार्य में अपना कीमती समय निकालकर साक्षात्कार एवं माहिती प्रदान की है उनके लिए में उन सभी का कृतज्ञ हूँ।

सन 2018 के बाद रमतगमत, युवा एवम् सांस्कृतिक प्रवृत्तियो के विभाग, गुजरात सरकार श्री तथा मेरे अधिकारी श्री एवं सभी सहयोगीओ का भी मेरे इस शोध कार्य में सहयोग देने के लिए तहे दिल से आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं मेरे पिता श्री हितेन्द्रकुमार रमणीकलाल पंडया, माता श्री जयश्री बेन पंडया और छोटी बहन सुश्री अमी पंडया के आशीर्वाद और शुभकामनाओं से मेरे इस कार्य को पूर्ण कर सका हूँ। उनका प्रेम और आशीर्वाद सदैव मेरा सद्भाग्य लिखता रहा है। अंततः मेरे इस शोध कार्य में मुझे सहयोग देने वाले नामी-अनामी सब मित्र, गुरु, गुनिजन, स्नेही सभी का हृदयपूर्वक आभार व्यक्त करता हूँ।

प्रणव पंडया